अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

155वां मर्यादा महोत्सव सुसम्पन्न कर गीतान्जलि से गतिमान हुए ज्योतिचरण

-लगभग छह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे 'मोती मंगलम'

-आचार्यश्री का अनुग्रह पाकर आह्लादित हुआ रांका परिवार

-आदमी को थोड़े के लिए ज्यादा को न छोड़ने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

13.02.2019 नवइंडिया, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): दक्षिण भारत के 'मैनचेस्टर', अद्यौगिक नगरी कोयम्बत्तूर में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुम्भ 155वें मर्यादा महोत्सव को सुसम्पन्न कर एक बार पुनः औद्योगिक नगरी के विभिन्न क्षेत्रों को पावन बनाने को गतिमान हुए। बुधवार की प्रातः गीतान्जलि स्कूल से आचार्यश्री ने मंगल प्रस्थान किया। लगभग छह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री नव इंडिया स्थित 'मोती मंगलम' में पधारे। आचार्यश्री की कृपा से निहाल रांका परिवार आह्लादित नजर आ रहा था।

प्रवास स्थल के निकट स्थित लाईफस्प्रिंग में आयोजित मंगल प्रवचन में सर्वप्रथम साध्वीप्रमुखा साध्वी कनकप्रभाजी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को उत्प्रेरित किया। तत्पश्चात् आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि थोड़े के लिए ज्यादा को गंवा देना विचारमूढ़ता होती है। कोई आदमी भला वह काम क्यों करे, जिसमें लाभ कम और हानि ज्यादा हो। शराब पीने वाले का चित्त भ्रांत हो जाता है। जिस आदमी का चित्त भ्रांत हो जाए वह आदमी पाप आदि कार्यों में भी जा सकता है। इसलिए आदमी को नशे आदि से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी कई बार नशे आदि के क्षणिक सुख के लिए शरीर आदि का कितना नुक्सान कर लेता है। इसी प्रकार आदमी बुरे कर्मों के द्वारा अपनी आत्मा का नुक्सान कर लेता है। आदमी को इससे बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अच्छे कार्यों के द्वारा अपनी आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी कई बार थोड़े से लाभ के लिए झूठ बोल देता है। आदमी इससे अल्पकालिक लाभ तो हो सकता है, किन्तु आदमी कितनी बड़ी ईमानदारी की सम्पत्ति का नुक्सान कर लेता है। आदमी को इस प्रकार के छोटे लाभ के लिए ईमानदारी जैसे रत्न को नहीं खोना चाहिए। इस प्रकार आदमी को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में थोड़े लाभ के लिए बहुत को नहीं छोड़ना चाहिए। आचार्यश्री ने रांका परिवार के निवास स्थान में पदार्पण के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की और पूरे रांका परिवार को विशेष आशीर्वाद भी प्रदान किया। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने लोगों को संबोधित किया।

रांका परिवार की कन्याओं द्वारा 'महाश्रमण अष्टकम्' का संगान किया गया। रांका परिवार की बहूओं ने तथा श्री गजेन्द्र कुमार जी ने गीत का संगान किया। श्रीमती आरती रांका, तेरापंथी सभा-कोयम्बत्तूर के अध्यक्ष श्री निर्मल रांका, श्री नरेन्द्र रांका, श्रीमती ज्योत्सना बोहरा, श्रीमती निशा रांका, सुश्री प्रांजल रांका, श्री तरुण सेठिया, श्री गौतम सेठिया, श्री संचय जैन, श्रीमती ललिता बरलोटा व श्रीमती माला कातरेला ने भी आचार्यश्री के समक्ष अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।